SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

ए. आर. खान,
प्राचार्य (बी.एड. एम.एड. कोर्स), एल. एन. मिश्रा कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत
संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर,बिहार, भारत
सचिन कुमार, शिक्षा विभाग,
रॉची विमेंस कॉलेज, रॉची, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author's :
ए. आर. खान,
प्राचार्य (बी.एड. एम.एड. कोर्स), एल. एन. मिश्रा कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत
संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर,बिहार, भारत
सचिन कुमार, शिक्षा विभाग,
रॉची विमेंस कॉलेज, रॉची, झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/03/2020
Revised on : -----
Accepted on : 30/03/2020
Plagiarism : 05% on 28/03/2020

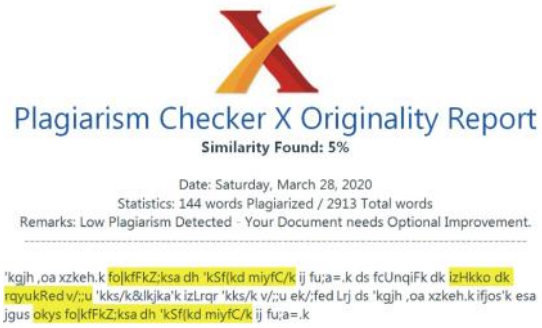
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 5%

Date: Saturday, March 28, 2020
Statistics: 144 words Plagiarized / 2913 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

'kgjh ,oa xzkeh.k fo|kfFkZ;ksa dh 'kSf{kd miyfC/k ij fu;a=.k ds fcUnqiFk dk izHkko dk rqyukRed v/;;u 'kks/k&lkjka'k izLrqr 'kks/k v/;;u ek/;fed Lrj ds 'kgjh ,oa xzkeh.k ifjos'k esa jgus okys fo|kfFkZ;ksa dh 'kSf{kd miyfC/k ij fu;a=.k

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ के प्रभाव पर किया गया है। यह अध्ययन बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला में स्थित बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा–11 में अध्ययनरत् 320 शहरी एवं ग्रामीण छात्र–छात्राओं पर किया गया है। अध्ययन का परिणाम यह रहा कि शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का मध्यम सार्थक सह संबंध पाया गया जबकि ग्रामीण परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का उच्च मध्ययम प्रभाव एवं ग्रामीण परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का मध्यम प्रभाव पाया गया संपूर्णता में यह पाया गया कि विद्यार्थी चाहें शहरी परिवेश से हो या ग्रामीण परिवेश से नियंत्रण का बिन्दुपथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

मुख्य शब्द :–

शैक्षिक उपलब्धि, नियंत्रण का बिन्दुपथ, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।

प्रस्तावना :–

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए यह आवश्यक हैं कि वहाँ पर शिक्षा का व्यापक रूप से प्रसार हो, प्रत्येक नागरिक चाहे वह ग्रामीण अंचल का हो या शहरी परिवेश का। दोनों को ही शिक्षा के समान अवसर सुलभ हो, जिससे दोनों सम्यक रूप से विकसित होकर राष्ट्र के विकास में सहयोगी बन सकें। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं, समाज में जन्म लेकर समाज में ही वह अपनी मान्यताओं के अनुसार अपना विकास करता हैं। व्यक्ति के अन्दर जन्म से जन्मजात शक्तियां भी विद्यमान रहती हैं,

जो वातावरण के सम्पर्क में आकर तद्नुरूप विकसित होता हैं। जिस प्रकार किसी वटवृक्ष का सारा विकास उसके लघुरूप बीज में सन्निहित रहता है, उसी प्रकार राष्ट्र का विकास उसके लघु रूप बालकों में छिपा रहता हैं। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर विकास की क्षमताएं रहती है, वह उनका विकास कर अपने को वातावरण में समायोजित करना चाहता हैं, पर वह अपनी उपयुक्त रूचि, अनुकूल शिक्षा व साधन मिलने पर ही ऐसा कर पाता हैं। शिक्षा के द्वारा बालक का मानसिक विकास होता है जिससे वह अपने को वातावरण के अनुकूल बनाता है क्योंकि सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने को वातावरण के साथ समायोजन करना आवश्यक होता है समायोजन में असमर्थ हो जाने पर बालक में असंतोष, चिड़चिड़ापन, मानसिक द्वन्द एवं तनाव जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है परिणामस्वरूप शिक्षार्थी की शैक्षिक प्रगति गड़बड़ाने लगती है जिसका मुख्य कारण व्यक्तिगत विभिन्नता है, क्योंकि प्रत्येक छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं नियंत्रण का बिन्दुपथ भिन्न–भिन्न होता है।

(फिन्डले एवं कूपर–1983) का शोध यह दर्शाता है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दुपथ का सम्बन्ध उच्च शैक्षणिक उपलब्धि से है। आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दुपथ से प्रभावित विद्यार्थी कठिन कार्य करते है एवं परीक्षा में अच्छे ग्रेड प्राप्त करते है। आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दुपथ वाले विद्यार्थियों में अध्ययनशीलता का गुण पाया जाता है वे गृहकार्य एवं परीक्षा हेतु अध्ययन में अधिक समय व्यतीत करते है। क्योंकि इनका विश्वास है कि मेहनत करने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते है। लेकिन फिर भी इस धारणा के बावजूद कुछ लोग बाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ में विश्वास करने लगते है।

बाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ की धारणा के विकास के संबंध में (बेन्डर–1995) का अध्ययन यह दर्शाता है कि– ''शैक्षिक कार्य, परीक्षा उपलब्धियों में नियमित या लगातार असफलता प्राप्त होने पर विद्यार्थियों में बाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ की धारणा का विकास होने लगता है और अगर उच्च बाहय नियंत्रण के बिन्दुपथ (high external locus of control) की धारणा विद्यार्थियों में नियमित या लगातार असफलता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हो जाती है तो यह विद्यालयी कार्य एवं अध्ययन में अभिप्रेरणा का आभाव कर देता है।

अगर किसी व्यक्ति में बाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ की गहरी धारणा बन जाती है तो वह यह अनुभव करता है कि मेहनत या कठिन कार्य करना बेकार है क्योंकि उसके द्वारा किए कार्य से केवल असफलता एवं निराशा प्राप्त होती है और अन्ततः वह यह धारणा बना लेता है कि मेरी किस्मत में असफलता ही है। उनके पास का अनुभव यह मानने के लिए बाध्य करता है कि किसी कक्षा में ग्रेड–। या प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए कठिन कार्य का कोई महत्व नहीं है, इसप्रकार का अनुभव बाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ की धारणा को विकसित करता है जिनमें यह धारणा उत्पन्न हो जाती है वे आसानी से अपनी असफलता को बिना व्यक्तिगत आत्मसम्मान के स्वीकार कर लेते है और अंततः यह धारणा उनमें सीखनें के व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का दृष्टिकोण है कि किसी भी व्यक्ति या बालक के सीखने के व्यवहार उसके सीखने की रणनीति की ओर संकेत करता है, इसलिए यहाँ एक प्रश्न उठता है कि किसी भी बालक के सीखनें की प्रक्रिया के दौरान उन पर नियंत्रण का बिन्दुपथ का एक दूसरे पर किसी न किसी प्रकार का प्रभाव पड़ता है। इस समस्या का सही समाधान प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का महत्व :–

शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र की बुनियादी आवश्यकता होती है इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, जिससे कि वह समाज का सभ्य एवं दायित्वपूर्ण नागरिक बन सके। कहा जाता है कि जिस प्रकार मनुष्य को जीने के लिए भूख, प्यास एवं श्वास की जरूरत होती है उसी प्रकार जीवन को क्रियाशील एवं गतिमान बनाये

रखने के लिए शिक्षा जरूरी है, परन्तु यह ध्यान में रखकर शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए कि 'शिक्षा बालक के लिए' हो न कि 'बालक शिक्षा के लिए'।

यह सभी जानते हैं कि बालक में जन्म से ही सीखनें की प्रवृति एवं स्वभाविक जिज्ञासा पाई जाती हैं जिसका बुद्धिमानीपूर्वक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, ताकि बालक जब बड़ा हो तो उसकी सीखनें एवं किसी विषय–वस्तु को ग्रहण करनें की प्रवृति बिना किसी विकृति के जीवन्त बनी रहें। यदि बालक में सीखने की उत्सुकता को सदैव प्रोत्साहन मिलता रहेगा तो कठिन से कठिन विषय भी उनके लिए समस्या नहीं बनेगें। जहाँ सुखद, स्नेह और समझदारी भरी देखभाल का वातावरण होता है वहाँ सीखनें की प्रक्रिया सरल हो जाती है।

वर्तमान समय पढ़ानें का नहीं बल्कि सीखानें पर जोर दे रहा है। बालक यह कहता है कि–''अगर आपके पढाने की विधि से हम नहीं समझ सकते हैं तो आप हमारे समझने कि विधि से नहीं पढ़ा सकते'' किसी बालक द्वारा कहे गए उक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि बच्चों की अधिगम शैली अर्थात् उनके सीखनें के तरीकों, उनके सीखनें की गति, उनके सीखनें की रणनीति को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करने होगें।

21 वीं0 सदी के आधुनिक दौर में बालक की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करनें वाले अनेक कारण दिखाई पड़तें हैं इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करनें वाले मनोवैज्ञानिक तत्वों को ध्यान में रखकर कक्षा–कक्ष शिक्षण किया जाना चाहिए इसी संदर्भ में यह अध्ययन हाईस्कूल के विद्यार्थियों की नियंत्रण के बिन्दुपथ का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी हेतु किया गया है जिससे यह पता लगाया जा सके कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं नियंत्रण के बिंदुपथ का संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्ध से किस प्रकार एवं कहां तक संबंधित है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्द

शैक्षिक उपलब्धि :–

शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत छात्रों के शैक्षिक ज्ञान तथा शैक्षिक कौशल की चर्चा की जाती है अर्थात् छात्र जिन विषयों का अध्ययन करते है तथा जिन विषयों का अध्यापन स्कूल में होता है, उस क्षेत्र में जो शैक्षिक ज्ञान एवं कौशल अर्जित किया जाता है उसे ही शैक्षिक उपलब्धि कहते है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से आशय कक्षा–11 में अध्ययनरत विधार्थियों के हाईस्कूल के बोर्ड परीक्षा के प्रतिशत प्राप्तांक से है।

नियंत्रण का बिन्दुपथ :–

रॉटर ने सन 1954 ई0 में सामाजिक सीखने के सिद्धान्त में व्यक्तित्व के प्रभाव के अध्ययन के क्रम में नियंत्रण के बिन्दुपथ (लोकस ऑफ कन्ट्रोल) की अवधारणा को बतलाया जिसमें उन्होंने कहा कि व्यक्ति के व्यवहार एवं कार्य करने के बाहय–आन्तरिक नियंत्रण के लिए सामान्यीकृत प्रत्याषा ही नियंत्रण का बिन्दुपथ है। उन्होंने कहा कि यह एक विश्वास है कि किसी कार्य में उपलब्धि के संबधं में यह मानना कि यह उसके अपने प्रयास या कार्य का परिणाम है या किसी वाह्य शक्ति जैसे–भगवान, भाग्य, किस्मत या किसी अन्य शक्ति का चमत्कार। प्रस्तुत अध्ययन में नियंत्रण के बिन्दुपथ के दो आयाम आन्तरिक एवं बाहय नियंत्रण के बिन्दुपथ के प्राप्तांकों को शामिल किया गया है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी से आशय बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा–11 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से है।

अध्ययन का शीर्षक :–

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिण उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य संबधों का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के माध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
2. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं हैं
3. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

प्रतिदर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा–11 में अध्ययरत छात्र एवं छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है। प्रतिदर्श का चयन बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के मान्यताप्राप्त विद्यालयों से किया गया एंव यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया। इसके अन्तर्गत कुल 320 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

तालिका–1:

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श का विवरण

भौगोलिक क्षेत्र	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	योग
शहरी	एल0एस0 कॉलेज, मुजफ्फरपुर	40	–	40
	आर.एल.सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर	–	40	40
	जिला स्कूल, मुजफ्फरपुर	40	–	40
	एस.एन. सहाय कॉलेज, मुजफ्फरपुर	–	40	40
	योग	**80**	**80**	**160**
ग्रामीण	उच्चतर मा0 विद्यालय, तुर्की, मुजफ्फरपुर	–	40	40
	आर.एस.एस. ईटर कॉलेज, चोचहां, सरैया, मुजफ्फरपुर	40	–	40
	एम.एस. दास महिला कॉलेज, सिरिकियां, मुजफ्फरपुर	–	40	40
	राम दयालु हाई स्कूल, गांगेय, मुजफ्फरपुर	40	–	40
	योग	**80**	**80**	**160**
	योग	**160**	**160**	**320**

(**स्त्रोत**: प्राथमिक समंक)

अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन समस्या के उद्देश्यों को ध्यान में रख कर घटनोतर शोध विधि का प्रयोग किया गया है एंव प्राप्त परिणामें की व्याख्या वर्णात्मक शोध विधि के आधार पर की गई है।

उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदतों के संकलन के लिए डॉ0 एन0 हसनैन एवं डॉ0 डी0डी0 जोशी द्वारा निर्मित नियंत्रण का बिन्दुपथ अनुसूची का प्रयोग विद्यार्थियों के आन्तरिक एवं वाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ के प्रभाव के अध्ययन के लिए किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए छात्र एवं छात्राओं के कक्षा–10 के बिहार परीक्षा बोर्ड में प्राप्त प्राप्तांकों को लिया गया।

सांख्यिकीय मापक

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आन्तरिक एवं वाह्य के बिन्दुपथ के प्रभावों के अध्ययन हेतु प्रकीर्ण आरेख विधि से चरों के मध्य सह–संबधं की गणना की गई जिसमें इसके प्रभावों को आकलन किया जा सके।

अवधारणाएँ :–

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है :–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 में अध्ययरत छात्र–छात्राओं सम्पूर्ण विद्यार्थियों का उचित प्रतिनिधित्व करते है।
2. माध्यमिक स्तर के 320 छात्र–छात्राओं का न्यादर्श इस अवधारणा पर आधारित है कि वह मजुफ्जरपुर जिला के सम्पूर्ण ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं उचित प्रतिनिधित्व करते है।
3. नियंत्रण का बिन्दुपथ अनुसूची का प्रयोग इस अवधारणा पर आधारित है कि उतरदाताओं को ठीक–ठाक हिन्दी भाषा का ज्ञान है और मांगी गई सूचनाओं के प्रति वह जानकारी रखता है।
4. नियंत्रण का बिन्दुपथ अनुसूची का अभिज्ञान इस अवधारण पर आधारित है कि डॉ0 एन.एन. हसनैन एवं डॉ.0 डी.डी. जोशी द्वारा निर्मित नियंत्रण का बिन्दुपथ अनुसूची विद्यार्थियों के परीक्षण के लिए पूर्णतः वैध व विश्वसनीय है।
5. शैक्षिक उपलब्धि के लिए हाईस्कूल के फाइनल बोर्ड परीक्षा में छात्र–छात्राओं द्वारा प्राप्तांक को लिया गया है।

सीमांकन :–

प्रस्तुत अध्ययन की व्यापकता को देखते हुए इस समस्या पर व्यवहारिक अध्ययन के दृष्टिकोण से इस अध्ययन को निम्न रूप से सीमांकित किया गया है –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर केवल आन्तरिक निंयत्रण के बिन्दुपथ एंव वाहय नियंत्रण के बिन्दुपथ के प्रभाव का ही अध्ययन किया गया है।
2. विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव के अन्य कारको में केवल शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के प्रभाव तक ही अध्ययन को सीमित रखा गया है।
3. विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के प्रभाव के अतिरिक्त छात्र एवं छात्राओं पर नियंत्रण के बिन्दुपथ के प्रभाव का अध्ययन अलग अलग किया गया है।
4. यह अध्ययन केवल कक्षा–11 में अध्ययनरत मुजफ्फरपुर जिला के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों एवं इंटर कॉलेजों तक सीमांकित किया गया है।

परिणाम :–

1. प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम यह रहा कि अध्ययन उद्देश्य–1 के लिए बनाई गइ पकिल्पना अस्वीकृत हो गई अर्थात् शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य सार्थक सह संबंध पाया गया अर्थात् परीक्षण के आधार पर यह पाया गया कि शहरी परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का उच्च सार्थक प्रभाव पडता है जबकि शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ माध्यम सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम यह रहा कि अध्ययन उद्देश्य–2 के लिए बनाई गई परिकल्पना भी अस्वीकृत हो गई अर्थात् ग्रामीण छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ के मध्य भी सार्थक सह संबधं पाया गया अर्थात् परीक्षण के आधार के आधार पर पाया गया कि ग्रामीण परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर है, निंयत्रण के बिन्दुपथ का उच्च सार्थक प्रभाव पाया गया जबकि ग्रामीण परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का मध्यम सार्थक प्रभाव पाया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम यह रहा कि अध्ययन उद्देश्य–3 के लिए बनाई गई परिकल्पना भी अस्वीकृत हो गई अर्थात् शहरी परिवेश के छात्र एवं छात्राएं हो ग्रामीण परिवेश के छात्र एवं छात्राएं हो सभी की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का सार्थक प्रभाव पाया गया। समग्रता से देखा जाए तो तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी छात्रों पर नियंत्रण का बिन्दुपथ का अध्ययन प्रभाव पाया गया। जबकि ग्रामीण परिवेश की छात्र एवं छात्राओं दोनों पर नियंत्रण के बिन्दु एवं छात्राओं तथा शहरी छात्राओं की तुलना में शहरी छात्रों में आन्तरिक निंयत्रण के बिन्दु पथ की धारणा के विकास पर बल देने की जरूरत है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का प्रभाव पडता है। तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का अत्यधिक प्रभाव पाया गया जबकि शहरी परिवेश की छात्राओं एवं ग्रामीण परिवेश की छात्र एवं छात्राओं पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का मध्यय प्रभाव पाया गया है। हम कह सकते है कि शहरी छात्रों में वाह्य नियंत्रण के बिन्दुपथ के प्रभाव है अर्थात् शहरी छात्र शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की तुलना में ज्यादा दैवीय शक्ति, चमत्कार या भगवान पर अपने उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने की आशा करते है। जबकि शहरी छात्राएं स्वंय की मेहनत, कर्म और स्वयं के कार्यो पर प्रभावित है यही स्थिति ग्रामीण परिवेश के छात्र एवं छात्राओं में भी पायी गयी।

शैक्षिण निहितार्थ :–

उपरोक्त अध्ययन के निष्कर्ष का शैक्षिक निहितार्थ यह है कि सभी विद्यार्थी चाहे वे शहरी परिवेश के हो या ग्रामीण परिवेश से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण के बिन्दुपथ का स्पष्ट प्रभाव पाया जाता है। स्पष्ट है कि शिक्षण कार्य का संचालन केवल किताबी ज्ञान के हस्तान्तरण तक सीमित नही रखा जा सकता है, बल्कि शिक्षक को चाहिए कि विद्यार्थी चाहें शहरी परिवेश के हो या ग्रामीण परिवेश उनमें आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दुपथ की भावना का समय समय पर विकास करते रहने चाहिए जिससे विद्यार्थी स्वयं को निरन्तर शिक्षण अधिगम कार्य में संलग्न करते रहे और उसमें स्वयं अध्ययन के प्रति सकारात्मक धारणा निरन्तर बनी रहे जिससे छात्र एवं छात्राएं शिक्षण अधिगम कार्य में उत्साह के साथ भाग लेते रहेंगें फलस्वरूप इसके प्रयोग से शैक्षिक उपलब्धि के उच्च स्तर को बनाए रखने में साकारात्मक भूमिका बनाए रखी जा सकेगी।

संदर्भ सूची :–

1. *त्रिपाठी, कुमुद (2004) : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का एक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 23, अंक–1, जनवरी–जून।*
2. *दूबे, भावेश चन्द्र (2011), विद्यार्थियों की शैक्षिक उापलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा एंव समायोजन का प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी, पृष्ठ 91–95।*
3. *बर्गेजर, माजिद (2011) : द रिलेशनशिप विटनीव लर्निंग स्टाइल, लोकस ऑफ कन्ट्रोल एण्ड एकेडमिक एचिवमेंट इन इरानियन स्टुडेन्टस, सेकेण्ड इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन एजुकेशन एण्ड मैनेजमेन्ट टेक्नोलॉजी, आई.पी.ई.डी.आर, वाल्यूम–13, आई.ए.सी, एस.टी. प्रेस सिंगापुर।*
4. *हसनैन, एन.एवं जोशी, डी.डी (1992): मैनुअल फोर लोकस ऑफ कन्ट्रोल स्केल (एल.सी.एस.) अंकुर साइकॉलॉजिकल एजेन्सी, लखनऊ पृ0 1–7।*
5. *तिवारी, पी.एस.एन (1990) : मैनुअल फॉर तिवारी एचिवमेंट मोटिव स्केल, (टी.ए.एम.एस) नेशनल साइकॉलोजिकल कॉरपोरेशन, आगरा, पृष्ठ–1–5।*
6. *नोडेशन, मो0 अली सलमानी (2012) : द इम्पैक्ट ऑफ लोकस ऑफ कन्ट्रोल ऑन लैंग्वेंज एचिवमेंट, इटरनेशनल जर्नरल ऑफ लैग्वेंज स्टडीज, वाल्यूम–6 (2) पृष्ठ–123–136।*
7. *व्यू, ताइन व्यू (1995) : चिल्ड्रेन सेक्स, लोकस ऑफ कन्ट्रोल एण्ड एकेडमिक एचिवमेंट, बूलेटिन ऑफ एजुकेशन साइकॉलोजी, वाल्यूम–8, पृष्ठ 107–114, जर्नल ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन साइकॉलोजी, नेशनल यूनिवर्सिटी, ताईवान।*
8. *कुमार, जगदीश (2015) : अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शिक्षा में बाधाएँ : एक अध्ययन, द जनर्ल ऑफ एजुकेशन एण्ड इडियन परस्पेक्टिव, वाल्यूम–VII नम्बर–2 पृष्ठ 33–36 जर्नल ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उतर प्रदेश।*
9. *दुबे, आमा एवं नायर, सौम्या (2016) : रोल ऑफ लोकस ऑफ कन्ट्रोल इन एकेडमिक एचिवमेंट ऑफ साईस स्टूडेण्टस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साईस मेंनेजमेंन्ट, वाल्यूम–6, नम्बर–4, पृष्ठ–416।*
10. *कुमार, सचिन (2014) : शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिगम शैली का प्रभाव, एजुकेशनल साईस रिव्यू, वाल्यूम–6, नं0–122, पृष्ठ–97–103।*
11. *कुमार, सचिन (2016) : विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिगम शैली एवं नियंत्रण के बिन्दुपथ का प्रभाव, एजुकेशनल साईंस, रिव्यू, वाल्यूम–8, नं0–122, पृष्ठ–58–64।*
12. *वैष्णव, एस. राजश्री (2011) : लर्निंग स्टाइल एण्ड एकेडमिक एचिवमेंट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टुडेन्ट, वॉयस ऑफ रिसर्च, वाल्यूम–2, इग्यु–4, मार्च।*

****